UNIVERSAL LIBRARY

OU_180893

UNIVERSAL LIBRARY

गीले गीत

समालोचनार्थ
[illegible] प्रति भेंट

रचयिता
रघुवीर शरण 'मित्र'

प्रकाशक—
भारतीय साहित्य प्रकाशन
२३२-स्वराज्य पथ, सदर मेरठ

प्रकाशक—
परमात्मा शरण एम. ए., एल-एल. बी.
भारतीय साहित्य प्रकाशन
२३२, स्वराज्य पथ,
सदर, मेरठ।

प्रथम संस्करण
१९५६
मूल्य २॥)

मुद्रक—
मदन मोहन
निष्काम प्रेस,
मेरठ।

भूमिका

श्री रघुवीर शरण "मित्र" के गीतों का संग्रह 'गीले गीत' के नाम से प्रकाशित होने जा रहा है। उनकी इच्छा है कि इसकी भूमिका मैं लिखूं। मित्र जी हिन्दी गद्य-पद्य के जाने-माने लेखक हैं। उनकी रचनाओं को किसी की भूमिका की आवश्यकता नहीं है। पर हम क़लम के मज़दूरों में यह शिष्टाचार है कि जब हम किसी भाई-मज़दूर के प्रति समादर प्रदर्शित करना चाहते हैं तब हम उसे अपनी कृति समर्पित करते हैं अथवा उससे भूमिका लिखने को कहते हैं। किसी कृति के साथ, लेखक के अतिरिक्त, किसी और का नाम संबद्ध करने का कोई तीसरा तरीक़ा नहीं है। मैं मित्र जी के प्रति बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे यह आदर दिया। मैं चाहता हूँ कि मित्र जी की रुचि और ऊँची होती और इस कार्य के लिए वे किसी ऐसे व्यक्ति को चुनते जो मुझसे अधिक इस सम्मान का अधिकारी होता।

खड़ी बोली हिन्दी की कविता आज जिस सतह पर है उससे मुझे संतोष भी है और असंतोष भी। खड़ी बोली कविता का इतिहास लगभग पचास वर्षों का है। भारतेन्दु की मृत्यु १८८५ में हुई थी और खड़ी बोली में पद्य उन्होंने केवल इस उद्देश्य से लिखा था कि यह सिद्ध हो जाय कि खड़ी बोली में कविता नहीं की जा सकती। पर

जहाँ कुछ लोग खड़ी बोली को काव्य की भाषा बनाने पर तुले हुए थे वहाँ कुछ लोग उसका विरोध करने पर भी।

श्री सुमित्रानंदन पंत का 'पल्लव' १९२६ में प्रकाशित हुआ। उसकी भूमिका पढ़ने से पता चलेगा कि उस समय तक भी खड़ी बोली बनाम ब्रज भाषा का झगडा समाप्त नहीं हुआ था और उन्हें अपनी भूमिका का एक बड़ा अंश ब्रज भाषा का विरोध और खड़ी बोली का समर्थन करने में लगाना पड़ा था।

खड़ी बोली काव्य की कोई परम्परा नहीं थी। जो कुछ भी थी वह उर्दू में थी। उर्दू वालों ने हिन्दी वालों से बहुत पहले खड़ी बोली की साहित्यिक संभावनाओं को परख लिया था। जिस समय हिन्दी का आविर्भाव हुआ उसके बहुत पहले उर्दू ने परिपक्वता और लोकप्रियता पा ली थी। भारतेन्दु ने लिखा, 'भाषा भई उर्दू जग की····।'

उनके पश्चात हिन्दी पत्रकारों ने चालीस वर्ष तक भाषा के विविध प्रयोग किए, अतीत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और साहित्यिक परम्पराओं से उसका नाता जोड़ा और देश के नवजागरण से स्फुरित अनेक भाव और विचारों को छंद-बद्ध किया। इस साधना के फलस्वरूप छायावादियों की कृतिकाया में कवित्व की पहली साँसें सुनाई पड़ीं।

बड़े पेड़ की छाया में छोटा पेड़ नहीं उगता। हिन्दी सतर्क थी। उसी बोली को आधार मान, जिसका विकास एक समृद्ध साहित्य के

रूप में हो चुका था, उसने एक नई भाषा की जड़ जमाई। संसार-साहित्य के इतिहास में इसका दूसरा उदाहरण नहीं है। देश के नए जागरण को एक नई भाषा की आवश्यकता थी— यह इसका सबसे बड़ा बल था।

हिन्दी कवियों ने एक ऐसी भाषा गढ़ी जिसमें और कुछ भी हो, उर्दू की छाया न हो। उर्दू के बहिष्कार से वे उसकी बहुत सी ऐसी खूबियों से भी वंचित हो गए जो खड़ी बोली की अपनी प्रतिभा-प्रवृत्ति की देन थी और जो उर्दू में समाहित और समादृत हो चुकी थी।

छायावादियों ने जो नीति अपनाई वह हिन्दी का व्यक्तित्व स्थापित करने के लिए आवश्यक थी। छायावाद के उत्तराधिकारियों ने छान-छान कर अब उस अंश को अपनाना शुरू कर दिया है जिसके बिना हिन्दी बनावटी भाषा मालूम होती थी।

भाषा को बनाने में कवियों का बड़ा हाथ होता है। यह पीढ़ियों का काम है। हिन्दी के जिन कवियों ने खड़ी बोली हिन्दी को उसकी स्वाभाविक ध्वनि-धारा की ओर फेरा है उनमें 'मित्र' जी का भी नाम लिया जायगा। उसी क्षेत्र के वासी होने के कारण जिसकी जनपदीय भाषा भी खड़ी बोली है, वे उसकी एक ऐसी अंतर्ध्वनि से परिचित हैं जिसे सुन पाना हिन्दी के बहुत से कवियों के लिए दुर्लभ है।

भावनाओं की बात मैंने नहीं की। प्रारम्भिक प्रयोग का काल छोड़ दें तो हिन्दी कविता की गति आध्यात्मिकता से भौतिकता की

ओर, और कवियों की निर्वैयक्तिकता मे वैयक्तिकता की ओर रही हैं। समाज की विभिन्न परिस्थितियों में पड़े व्यक्तियों की प्रतिक्रियाएँ विभिन्न होती हैं। छायावादी कविताओं में एकरसता थी। वैयक्तिकता की प्रमुखता के साथ बहुरसता का आगमन हुआ है। मित्र जी का अपना व्यक्तित्व है, अपनी प्रतिक्रियाएँ हैं, अपनी वाणी है। अपनी वाणी से वे कितनों की भावनाओं को छूते-छेड़ते-जगाते हैं, यह उनके पाठक बताएंगे। कविता की सफलता की कसौटी जन-स्वीकृति है, और उसे किसी भी तरह प्रभावित नहीं किया जा सकता। हम कवियों का कर्त्तव्य है कि अपनी साधना का फल जनता के सामने उपस्थित करें और उसकी सुरुचि में विश्वास रक्खें।

एक बार फिर मैं मित्र जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने मुझे 'गीले गीत' के साथ अपना नाम संबद्ध करने का अवसर दिया।

विदेश मंत्रालय,
नई दिल्ली
११-५-५६

—हरिवंश राय 'बच्चन'

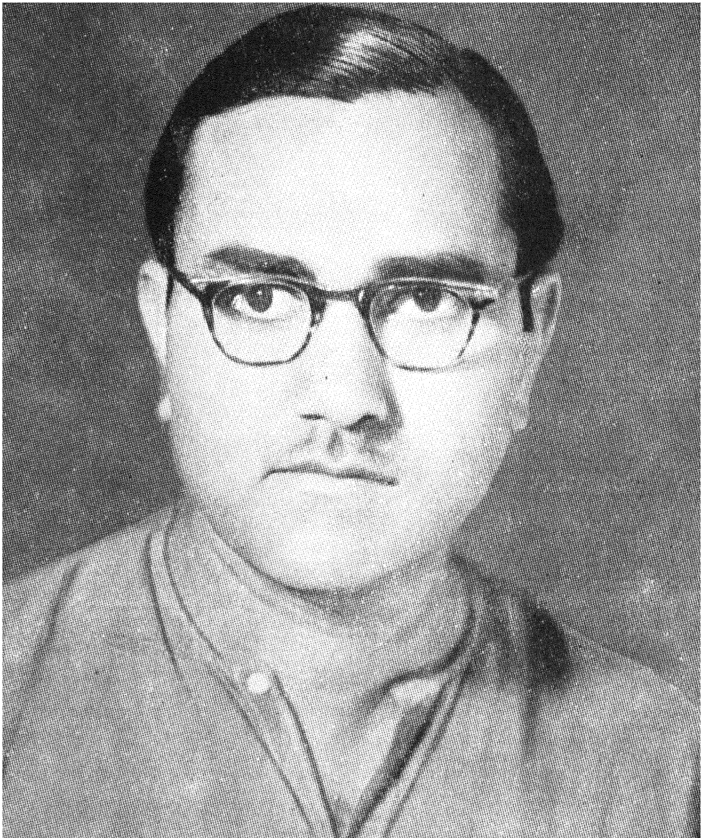

''मित्र''

दुःख के क्षण अर्चना के क्षण होते हैं। टीस जब उठती है तो गीत फूटता है। क्षिति से लेकर क्षितिज तक जो कुछ भी दीखता है वह सब दर्द भरे गीतों का इन्द्रधनुष है। दर्द वह आवाज़ है जो ससीम से असीम तक आती जाती है।

सौन्दर्य मेरा साधन है और शिव साध्य। मैं नहीं जानता कि कला क्या बला है, यह भी कहना नहीं चाहता कि प्रस्तुत पुस्तक में छायावाद है, रहस्यवाद है, अथवा प्रगतिवाद है। शास्त्रीय तारीफों के पुल बाँधकर मैं अपने गीतों को हल्के करना नहीं चाहता। मैं तो केवल यह जानता हूँ कि इस पुस्तक में मेरे अपने प्रयोग हैं, अपनी प्रतिक्रियाएँ हैं और अपनी अनुभूतियाँ हैं।

गीत वह है जो अधरों पर घर करले। वास्तव में गीत आत्मा की बहुत बारीक ध्वनि है। मैं यह कह सकता हूँ कि 'गीले गीत' मेरी आत्मा के गीत हैं।

बहुतों ने बहुत गाया पर गीत अधूरा ही है। न मृत्यु जीती और न संसार हारा, न प्रश्न पूरे हुए और न उत्तर ही पूर्ण हैं। शास्त्रों में, धर्मग्रन्थों में, ज्ञान, विज्ञान और इतिहास में जो कुछ भी है वह मन्दिर की परिक्रमा मात्र है।

यह संसार अनेकों चित्रों का मन्दिर है। कुछ चित्र मूक हैं, कुछ

बोलते हैं ग्रौर कुछ गाते हैं। 'गीले गीत' में ऐसे ही मूक, मुखर ग्रौर गायक चित्र हैं। मेरे ये गीत ग्राँखों देखे चित्र हैं। मैंने जो कुछ देखा, जो कुछ सुना ग्रौर जो कुछ पढ़ा उस सबका निचोड़ 'गीले गीत' में है। ये गीत केवल ग्रनुभूति ग्रौर ग्राँसुग्रों के ही गीत नहीं हैं, ग्रपितु इन गीतों में वह सत्य है जो शायद धर्मशास्त्रों के पष्ठों से छूट गया है। इनमें जीवन ग्रौर जगत के वे रूप हैं जिन्हें ग्रादर्श में छिपाने के झूठे प्रयत्न किये गये हैं। यथार्थ न कभी मिटा है ग्रौर न मिटेगा। मेरे ये गीत यथार्थ हैं, इनमें मेरा ग्रौर ग्रापका हृदय है, साधारण शब्दों में ये मेरी ग्रौर ग्रापकी बातें हैं। जल में रह कर जो कुछ जलज ने देखा वही तो 'गीले गीत' में संग्रहीत है।

मैं काव्य सृजन इसलिये नहीं करता कि दुनिया मेरी पूजा करे, ग्रपितु यह मेरी विवशता है, मुझे इससे दुःख में भी लोकोत्तर ग्रानन्द मिलता है। यह भी हो सकता है कि ईश्वर ने मुझे कुछ दिन यही तमाशा दिखाने के लिये इस मर्त्यलोक में भेजा हो। इसलिये गा रहा हूँ ग्रौर गाता रहूँगा, तब तक जब तक कि श्वास देने वाला मेरा स्वर बन्द नहीं कर देगा, वश चला तो मृत्यु की छाती पर भी गाता रहूँगा।

—रघुवीर शरण 'मित्र'

१७–५–५६

	पंक्ति	पृष्ठ
१	कब खोलोगे द्वार तमोहर	९
२	बात तुम्हारी ही है मैं तो अपने मुँह से कह देता हूँ	११
३	तुम को सौ सौ बार बधाई	१३
४	मैं सब से कह कह कर हारा	१५
५	मैं तो द्वार द्वार हो आया	१७
६	तेरी सूरत पर दीवाना	१९
७	गीतों में निर्झर	२१
८	गीत कैसा गा दिया तुमने कि मुर्दा जी उठा फिर मे	२३
९	फूलों की मुस्काती बातें भौंरे गुन गुन गाते	२५
१०	फूल खिलते तितलियाँ उड़तीं भ्रमर गाते	२७
११	कौन सा वह फूल जो चुभता न डाली के हृदय मे	२९
१२	अम्बर के नीचे धरती पर फूलों की बातें	३१
१३	बीत चुका है स्वप्न याद तू भी जा	३३
१४	मुखर हो जाओ गगन के मौन तारो	३५
१५	चाहता हूँ नीर देकर आग को पानी बना दूँ	३७
१६	बादलो बरसो धरा की आग पानी माँगती है	३९
१७	दाता इतने दुःख न देना	४१
१८	मुझ से दूर चले मत जाना	४३
१९	दूर चल संसार से गा लें	४५
२०	चाह से खेलो न तुम मैं रो पड़ूँगा	४७
२१	मुस्करा कर रो रहा हूँ	४९
२२	तुमने मुझे अधर में छोड़ा	५१
२३	मेरे चेतन प्राण जाग भी जाओ	५३
२४	तुम शरीर हो मैं हूँ छाया	५५

२५	काली रात चाँद चमकीला	५७
२६	मैं अनुकूल नहीं हो पाई	५९
२७	अनुकूलों से दूर हुआ मन	६१
२८	मैं गीली आँखों से गीले गीत लिख रहा हूँ	६३
२९	आँख तुम्हारी भर भर आतीं	६५
३०	ज़िन्दगी की राह ढलती धूप सी है	६७
३१	राह हमसे दूर होती जा रही है	६९
३२	मेरे प्राण मुझे मिल जाओ	७१
३३	आँसुओं का हार पहिनाऊँ तुम्हें	७३
३४	पास बुलाकर दूर कर दिया	७५
३५	दूर दूल्हा है सजे सारे बराती	७७
३६	तुमने गाया गीत कहीं से	७९
३७	तुमसे अच्छा ध्यान तुम्हारा	८१
३८	तिमिर के वक्ष पर दीपक जलादो	८३
३९	सत्य हूँ शिव हूँ पगों में बन्दिनी है जय	८५
४०	मरण के वक्ष पर इतिहास जीवित है	८८
४१	बुझ न जाये दीप इस तूफान में	९१
४२	यह तुमने क्या किया बताओ	९३
४३	तुमने मुझको क़ैद कर लिया	९५
४४	कौन काँटों में खिलाये जा रहा है फूल	९७
४५	रात भर बरसात होती ही रही	९९
४६	पेड़ पर पक्षी अकेला रो रहा है	१०१
४७	जीत की दुलहन मिली हर हार पर दीपक लिए	१०३
४८	आँखों को क्या हुआ न जाने	१०५
४९	तेरी पर्दे की सूरत पर मैंने खुद को मिटा दिया है	१०७
५०	रो रहा हूँ मैं मुंदी तक़दीर जैसे रो रही हो	१०९
५१	रात ढलती जा रही है दिन निकलता आ रहा है	१११

गीले गीत

१

कब खोलोगे द्वार तमोहर !
बोलो सुन्दर !

मेरा सत्य थका जाता है।
शिव दर दर ठोकर खाता है॥
चरणों में गल चुका कभी का।
मन्दिर में जल चुका कभी का॥

लो हारों का हार यशोधर !
कब खोलोगे द्वार तमोहर !
बोलो सुन्दर !

अपना मौन मुखर भी कर दो !
भावों में सुन्दरता भर दो !
फूलों पर भौंरे बन जाओ !
प्राणों में गीता बन आओ !

तुम मेरे स्वरकार मनोहर !
कब खोलोगे द्वार तमोहर !
बोलो सुन्दर !

मेरी तृप्ति प्यास बन बैठी।
आराधना वास बन बैठी।।
तुम मेरे ओठों पर गाओ !
गीले गीतों में बस जाओ ! !

क्यों इतनी तकरार सहोदर !
कब खोलोगे द्वार तमोहर !
बोलो सुन्दर !

२

बात तुम्हारी ही है मैं तो, अपने मुँह से कह देता हूँ।
चोट तुम्हारी ही है मैं तो, अपने उर पर सह लेता हूँ।।

मेरे अधरों पर आ आ कर—
बोल रही वेदना तुम्हारी।
मेरी आँखों में रहती है—
गीली आँखों की लाचारी।।
मैंने जितने गीत लिखे हैं,
उतने ही आँसू फूटे हैं।
धरती पर जितने अक्षर हैं,
उतने ही तारे टूटे हैं।।

पतन तुम्हारा ही है मैं तो, आँसू बन कर बह लेता हूँ।
बात तुम्हारी ही है मैं तो, अपने मुँह से कह देता हूँ।।

रिमझिम करती रात तुम्हारी,
मेरी रातों में रहती है।
हिमगिरि के अन्तर की पीड़ा,
रेती पर रस बन बहती है।।

फूलों की मुस्कान गुलाबी,
प्यासे ओठों पर धर लेता।
सागर के चौदह रत्नों को,
गीले गीतों में भर लेता।।

प्यास तुम्हारी ही है मैं तो, निज अधरों पर धर लेता हूँ।
बात तुम्हारी ही है मैं तो, अपने मुँह से कह देता हूँ।।

अन्तर से ओठों तक आकर–
बात तुम्हारी रुक जाती है।
क्यों निगाह मेरी आँखों से–
टकराते ही झुक जाती है।।

लाख छिपाओ तुम पर मैं तो–
बात तुम्हारी सुन ही लेता।
अब चाहे तुम चुभो, फूल तो–
काँटों को भी चुन ही लेता।।

दोष तुम्हारा ही है मैं तो, बन्दी बनकर रह लेता हूँ।
बात तुम्हारी ही है मैं तो, अपने मुँह से कह देता हूँ।।

३

तुमको सौ सौ बार बधाई !

तुम जलते दीपक मैं उससे–
उड़ता हुआ धुआँ हूँ काला ।
मैं तब काली रात रह गया,
तुममें जब बढ़ गया उजाला ।।
मेरी लघुता ने ही तुमको–
गुरुता का सम्मान दिया है ।
तुमने मुझसे ही कुछ पाकर–
मेरा ही अपमान किया है ।।

जीने को आँसू दे डाले, मैं किस मुँह से करूँ बड़ाई !
तुमको सौ सौ बार बधाई !

यह कैसा चाँदना कि जिसमें–
निर्धन की कुटिया अँधियारी।
यह कैसी भिक्षा दी जिससे–
भूखा ही रह गया भिखारी॥
मेरा सत्याग्रह कहता है–
पूजा का अपराध बताओ!
शलभ जल चुका है दीपक पर–
अब तो घर घर में जल जाओ!!

मैं उतना ही बुरा हो गया, तुममें जितनी गुरुता आई।
तुमको सौ सौ बार बधाई!

तुम राजा बन गये और मैं–
फैला हुआ हाथ हूँ खाली।
उजड़ा हुआ बस गया मन्दिर–
बगिया में रोती हर डाली॥
हाय! सुर्ख आँखों के आगे–
जन जन की आँखें हैं गीली।
यह कैसा बसन्त है जिसमें–
फूल फूल की काया पीली॥

मैं उतना ही दीन बन गया, तुमने जितनी दया दिखाई
तुमको सौ सौ बार बधाई

४

मैं सबसे कह कह कर हारा।
अब तेरा ही मुझे सहारा॥

मेरे देव! मुझे अपनालो।
मेरी बिगड़ी बात बनालो॥
मैं अपनों ही से हारा हूँ।
चरणों में बहती धारा हूँ॥

हटता जाता दूर किनारा।
मैं सबसे कह कह कर हारा॥

तेरे होते मैं रोता हूँ।
मैं पानी पानी होता हूँ॥
अपनी पीड़ा को पहचानो!
मुझको अपनी सीता जानो!!

मैं प्यासा हूँ, तुम हो धारा।
मैं सबसे कह कह कर हारा॥

मैंने कहा सुनो सरिताओ!
गिरे हुए फूलों मुस्काओ!
सबने सुनी अनसुनी कर दी।
हँसी छीन ली, पीड़ा भर दी॥

मैं पक्षी हूँ, तुम हो कारा।
मैं सबसे कह कह कर हारा॥

५

मैं तो द्वार द्वार हो आया।
हर मन्दिर में दीप जलाया।।

पर तुम किस मन्दिर के वासी ?
तुम को ढूंढ रहा सन्यासी।।
डाली डाली पर हो आया।
द्वार द्वार पर शीश झुकाया।।

किन्तु तुम्हारा पता न पाया।
मैं तो द्वार द्वार हो आया।।

मिला बहुत चरणों का चन्दन।
या अपनी आँखों का क्रन्दन॥
धरती मुझसे नीति माँगती।
कविता मुझसे प्रीति माँगती॥

मैंने कुछ रो रो कर गाया।
मैं तो द्वार द्वार हो आया॥

मैंने तुम्हें पवन में ढूँढा।
मैंने तुम्हें चमन में ढूँढा॥
चलता चलता धूल बन गया।
दबता दबता फूल बन गया॥

मैंने मिट कर फूल चढ़ाया।
मैं तो द्वार द्वार हो आया॥

६

तेरी सूरत पर दीवाना।
तुम दीपक हो, मैं परवाना॥

तुमने जल कर मुझे जलाया।
मैंने जल कर तुमको पाया॥
जलन तुम्हारी मैंने पी है।
जल जल शिखा तभी तो जी है॥

तुमने सीखा मुझे जलाना।
तुम दीपक हो, मैं परवाना॥
तेरी सूरत पर दीवाना।

हर सूरत में तुझे देखता।
हर मूरत में तुझे देखता।।
पूजा थकी, साधना हारी।
कब तक होगी दया तुम्हारी ?

तुमने मुझे नहीं पहचाना।
तुम दीपक हो, मैं परवाना।।
तेरी सूरत पर दीवाना।

आँसू बन कर क्यों ढलते हो ?
दीपक बन कर क्यों जलते हो ?
मुझे बहाने को ढलते हो !
मुझे जलाने को जलते हो !!

बुरा बताता मुझे ज़माना।
तुम दीपक हो, मैं परवाना।
तेरी सूरत पर दीवाना।।

७

गीतों   में   निर्झर!
रीझ   भी   जाओ–
अर्घ्य इतना ही है ईश्वर!

प्रकृति के मरते जीते फूल,
दूर प्रिय! प्राणों के दो कूल;
भूल भी जाओ मेरी भूल।

मैं वीणा तुम स्वर,
गीतों   में   निर्झर!
रीझ   भी   जाओ–
अर्घ्य इतना ही है ईश्वर!

अर्चना पास किन्तु तुम दूर,
अश्रु की करुणा बनी कपूर ;
प्रीति की मंज़िल कितनी दूर !

सीमाहीन डगर,
गीतों में निर्झर !
रीझ भी जाओ–
अर्घ्य इतना ही है ईश्वर !

८

गीत कैसा गा दिया तुमने, कि मुर्दा जी उठा फिर से।

रुदन को हास में तुमने बदल डाला!
अधर पर रूप का तुमने धरा प्याला!!
बरसती आ रही रिमझिम मधुर बदली।
किसी के प्यार सी तुम कौन हो पगली?

फूल यह कैसा खिला जग में, कि भौंरा पी उठा फिर से।
गीत कैसा गा दिया तुमने, कि मुर्दा जी उठा फिर से॥

मरण को ज़िन्दगी सौन्दर्य देता है।
तुम्हारा गीत मेरी नाव खेता है।।
तनिक तुम मुस्कराईं, आँख हँस बोली–
रुदन की हास से लो हो गई होली।।

चाँद यह कैसा धरा पर है, अमृत मैं पी उठा फिर से।
गीत कैसा गा दिया तुमने, कि मुर्दा जी उठा फिर से।।

हमारी राह में फिर रोशनी आई।
बगीचे में बहारों की लड़ी लाई।।
भाल पर चाँद अधरों पर उषा धारे।
निगाहों में निगाहों के जड़े तारे।।

हृदय कैसा हर लिया तुमने, कि मुर्दा जी उठा फिर से।
गीत कैसा गा दिया तुमने, कि मुर्दा जी उठा फिर से।।

६

फूलों की मुस्काती बातें भौंरे गुन गुन गाते।

कौन जानता है भौंरों के मन की मधु गीतों में।
तुम क्या जानो कितनी आहें रोती हैं जीतों में।।
मुस्काते गाते अन्तर में चुभन लिये काँटों की—

थकित पथिक को फूलों का रस पीते और पिलाते।
फूलों की मुस्काती बातें भौंरे गुन गुन गाते।।

फूल फूल पर भौंरा मन का मरहम ढूँढ रहा है।
सुन न सके तुम फूल फूल से मन का दुःख कहा है।।
मुस्का कर यह कहा फूल ने दुःख न अपना गाओ-

अन्तर का धन पानी करके पागल यहाँ बहाते।
मुस्काते फूलों की बातें भौंरे गुन गुन गाते।।

नहीं देखते हम डाली पर खिलते रस देते हैं।
पर पूजा के लिये पुजारी हमें तोड़ लेते हैं।।
सुरभि और सौंदर्य हमारा चढ़ जाता पूजा में-

मिल जाते भगवान किसी को फूल धूल हो पाते।
मुस्काते फूलों की बातें भौंरे गुन गुन गाते।।

१०

फूल खिलते तितलियाँ उड़तीं भ्रमर गाते।

धूलि का सौन्दर्य डालो पर खिला।
ज़िन्दगी का गीत भौंरों को मिला॥
तितलियों का नृत्य आँखों में रहे।
पुतलियों में प्यार की गङ्गा बहे॥

भूल जाओ तुम गई बातें इसी नाते।
फूल खिलते तितलियाँ उड़तीं भ्रमर गाते॥

फूल से लेकर सुरभि उड़ते चलो।
रूप को छूकर न हाथों से छलो।।
गीत से पूजा करो तुम फूल की।
तोड़ मत लेना धरोहर धूल की।।

धूल को तुम ज़िन्दगी दो प्यार के नाते।
फूल खिलते तितलियाँ उड़तीं भ्रमर गाते।।

फूल के उर में भ्रमर गाता रहा।
रात भर बन्दी सुरभि पाता रहा।।
खुल गईं आँखें सबेरा हो गया।
उड़ गया भौंरा सुमन भी खो गया।।

इस तरह मिलने बिछड़ने को यहाँ आते।
फूल खिलते तितलियाँ उड़तीं भ्रमर गाते।।

११

कौनसा वह फूल जो चुभता न डाली के हृदय में !

आँख का काँटा किसी का रूप होता,
नयन में चुभता, नयन में प्यार सोता,
फूल हँसता, पाप का संसार रोता,

अर्चना किस फूल की अधिकार माली के हृदय में।
कौनसा वह फूल जो चुभता न डाली के हृदय में !

कालिमा हर ज्योति पर आती रही है,
पर उजाली और मुस्काती रही है,
चाँदनी का हार पहिनाती रही है,

तैरती रहती सदा ही सत्य की नौका प्रलय में।
कौनसा वह फूल जो चुभता न डाली के हृदय में!

चाँद चुभता है वियोगी के हृदय में,
हार होती है किसी की हर विजय में,
मृत्यु छाती पर खड़ी है प्राण! वय में,

घाव कितने ही छिपे हैं चाँद तारों के निलय में।
कौनसा वह फूल जो चुभता न डाली के हृदय में!

१२

अम्बर के नीचे धरती पर फूलों की बातें।

बहुत याद हैं बहुत भूल मैं गया,
नये नये अब रूप स्वप्न है नया,

चन्दा के ऊपर बदली की हैं काली रातें।
अम्बर के नीचे धरती पर फूलों की बातें।।

अभी दिवस था अभी रात हो गई,
बात बात में खत्म बात हो गई,

नदियों के जल में बहतीं दो कूलों की बातें।
अम्बर के नीचे धरती पर फूलों की बातें।।

गिरे पेड़ से फूल धूल हो गये,
प्रलय एक आई कि कूल खो गये,

एक रश्मि की प्यास पी गई फूलों की रातें।
अम्बर के नीचे धरती पर फूलों की बातें।।

मिले सूर्य से नयन कमल खिल गये,
पड़ी चाँद की दृष्टि अधर मिल गये,

कमलों के अन्तर में बन्दी भ्रमरों की बातें।
अम्बर के नीचे धरती पर फूलों की बातें—
बहुत याद हैं, बहुत भूल मैं गया।

१३

बीत चुका है स्वप्न, याद तू भी जा !

चाँद गया फिर तारे क्यों हैं ?
अम्बर में अंगारे क्यों हैं ?

टूट चुकी है बीन, नाद तू भी जा !
बीत चुका है स्वप्न, याद तू भी जा !!

बुझे दीप पर शलभ आ रहे।
प्राण ढूँढने प्राण जा रहे॥

उत्तर सारे मौन, वाद तू भी जा!
बीत चुका है स्वप्न, याद तू भी जा!!

मैं तो तुम्हें जिताकर हारा।
गगन ढूंढ कर टूटा तारा॥

टूट चुके नक्षत्र, चाँद तू भी जा!
बीत चुका है स्वप्न, याद तू भी जा!!

१४

मुखर हो जाओ गगन के मौन तारो !

भेद अम्बर के हृदय का खोल भी दो !
रूप के अपलक पुजारी! बोल भी दो।।
प्यार के दो बोल पृथ्वी पर उतारो !
मुखर हो जाओ गगन के मौन तारो !

प्रहरियो! बोलो, क्षितिज के पार क्या है ?
सृष्टि क्या है, सृष्टि का आधार क्या है ?
धरा का 'ध्रुव दीप' धरती पर उतारो !
मुखर हो जाओ गगन के मौन तारो !

'सप्त ऋषियों' का अमर सन्देश गा दो !
देवताओं की मधुर मुरली सुना दो ! !
रूप के शृंगार ! स्वागत है, पधारो !
मुखर हो जाओ गगन के मौन तारो !

चाँद के संसार में कब तक जलोगे ?
गगन के छाले छिपा कब तक छलोगे ?
टूटते हो किसलिये बोलो विचारो !
मुखर हो जाओ गगन के मौन तारो !

क्या तुम्हारा प्यार गूंगा ही रहेगा ?
क्या न उर की बात ईश्वर से कहेगा ?
रो रहा संसार, ईश्वर को पुकारो !
मुखर हो जाओ गगन के मौन तारो !

१५

चाहता हूँ नीर देकर आग को पानी बना दूँ।

जल रही है यह हरी धरती नये अंगार धधके।
चन्द्रमा की चाँदनी पर छा रहे हैं मेघ श्रम के।।
आज का विज्ञान भू का रक्त पीना चाहता है–

चाहता हूँ मैं धरा पर शान्ति की गङ्गा बहा दूँ।
चाहता हूँ नीर देकर आग को पानी बना दूँ।।

घोर कटुता पर मधुरता को बसाकर ही रहूँगा।
मैं मनुज को चाँद सूरज सा बना कर ही रहूँगा।।
स्वार्थ की स्याही मुझे काला बनाना चाहती है–

चाहता हूँ 'श्याम' को मैं 'राधिका' रानी बना दूं।
चाहता हूँ नीर देकर आग को पानी बना दूं।।

मैं अंधेरी रात में सूरज उगाना चाहता हूं।
मैं मनुज की आग आँसू से बुझाना चाहता हूँ।।
द्वेष का दीपक स्वयं जलता पतंगों को जलाता–

चाहता हूँ मैं जलन में प्रेम की मुरली बजा दूँ।
चाहता हूँ नीर देकर आग को पानी बना दूँ।।

१६

बादलो ! बरसो, धरा की आग पानी माँगती है।

तुम धरा का रक्त धो दो, भाल के श्रमकण सुखा दो,
या बरस कर आँसुओं के साथ धरती को डुबा दो;
देखते हो भूमि पर दुर्बल सताया जा रहा है–

दुर्बलों की ज़िन्दगी तुम से जवानी माँगती है।
बादलो ! बरसो, धरा की आग पानी माँगती है।।

दीप के नीचे पतंगों की चिता पर नीर छिड़को,
हर वियोगी की उमंगों की चिता पर नीर छिड़को;
पीड़ितों के पैर की मिट्टी गगन तक उड़ सके अब–

इसलिये झुलसी हुई धरती रवानी माँगती है।
बादलो! बरसो, धरा की आग पानी माँगती है।।

ले गये नभ में धरा की आँख का अनमोल पानी,
भूमि का धन भूमि को देकर बने अनमोल दानी;
देवता मथकर अमृत तो ले गए सारा उदधि का–

भूमि नभ से सिन्धु-सा अनमोल दानी माँगती है।
बादलो! बरसो, धरा की आग पानी माँगती है।।

१७

दाता ! इतने दुःख न देना जो मैं आँसू रोक न पाऊँ।

सब दुख देना लेकिन आँसू आँखों में बन्दी कर लेना।
मेरी पीड़ा पर दुनिया को हँसने का वरदान न देना।।
मेरी आँखों का खारी जल प्यासे मेघों को दे देना।
सागर जब धन वापिस माँगे मुझसे बूंद-बूंद ले लेना।।

जिस क्षण जल माँगे यह धरती, मैं झरता बादल बन जाऊँ।
दाता ! इतने दुःख न देना जो मैं आँसू रोक न पाऊँ।।

अब जलते जल में जलने का जीवन को अभ्यास नहीं है।
बहुत बार लुट चुका किसी पर अब मुझको विश्वास नहीं है।।
यहाँ कहाँ आँसू की कीमत, प्राणों का व्यापार यहाँ है।
यहाँ कहाँ दु:खों के साथी, छलियों का संसार यहाँ है।।

ऐसा गीत न देना मुझको छलियों की गलियों में गाऊँ।
दाता! इतने दु:ख न देना जो मैं आँसू रोक न पाऊँ।'

क्या अपने पीड़ित मनुष्य पर तुझको तरस नहीं आयेगा?
क्या तेरा आराधक राही दर दर ठोकर ही खायेगा?
उँगली पकड़ प्यार से मुझको अपने मन्दिर में ले आओ!
रोने का अभ्यास नहीं अब, मैं गाऊं तुम बीन बजाओ!!

पूजा आती नहीं मुझे कुछ, बोलो कैसे तुम्हें रिझाऊँ!
दाता! इतने दु:ख न देना जो मैं आँसू रोक न पाऊँ।।

१८

मुझ से दूर चले मत जाना !

मेरी फूलों सी भूलों पर तुम कपूर से मत बन जाना ।
मेरे मन के अन्धकार में अपने शाश्वत दीप जलाना ।।
मैं तो हारा हुआ पथिक हूँ, मेरी जीत ! मुझे छू लेना ।
मेरी भूलों को दुलरा कर, मेरे गीत ! मुझे छू लेना ।।

मैं अछूत हूँ किन्तु दूर से तुम गीतों के पथ से आना !
मुझ से दूर चले मत जाना !

मेरे श्वासों की वीणा में गीत तुम्हारा गूँज रहा है।
मेरे मानस की पीड़ा में गीत तुम्हारा गूँज रहा है।।
फूल फूल में पात पात में बसी हुई तस्वीर तुम्हारी।
तेरे मन्दिर को नहलादे मेरी आँखों की पिचकारी।।

चन्दा ! मुझसे दूर रहो पर मुझे चाँदनी से नहलाना !
मुझ से दूर चले मत जाना !

हार जीत में पाप पुण्य में मेरी गति की पाखों में हो।
उम्र-उम्र में प्यास-प्यास में गीत-गीत में आँखों में हो।
नहीं ज़िन्दगी में पर मर कर तो मैं तुम में मिल जाऊँगा।
मिट्टी में मिलकर मिट्टी की दुनिया में तुमको पाऊँगा।।

मेरी मिट्टी के फूलों पर कोयल ! तुम बसन्त बन आना !
मुझ से दूर चले मत जाना !

१६

दूर चल संसार से गा लें!

सुन न पाये यह जगत दुख की कहानी।
बह न जाये प्यार का अनमोल पानी।।
राह रच लें, शून्य में दुनिया बसा लें!

दूर चल संसार से गा लें!

मोतियों का मोल दुनिया में कहाँ है!
आँसुओं की तोल दुनिया में कहाँ है!
फूल आँखों से बिखरते हैं, उठा लें!

दूर चल संसार से गा लें!

वेदना के गीत ये तारे सुनेंगे।
आँसुओं की बात अंगारे सुनेंगे॥
फूल कोई हो कि जिस पर गुनगुना लें!

दूर चल संसार से गा लें!

२०

चाह से खेलो न तुम, मैं रो पड़ूँगा।

मैं अभी हँसता हुआ रो कर चुका हूँ।
आँसुओं से ज़िन्दगी धो कर चुका हूँ।।
सो रही है पीर लग मेरे हृदय से।

आह से खेलो न तुम, मैं रो पड़ूँगा।
चाह से खेलो न तुम, मैं रो पड़ूँगा।।

चल रहा हूँ याद सा, हद है सहन की।
हर चरण पर राख गाती है दहन की।।
ज़िन्दगी खोयी डगर में ढूंढता हूँ।

राह से खेलो न तुम, मैं रो पड़ूँगा।
चाह से खेलो न तुम, मैं रो पड़ूँगा।।

रूप का दीपक जला है मैं पतंगा।
बह रही जलती चिता पर प्राण गंगा।।
जल रहा हूँ नीर बहता जा रहा है।

दाह से खेलो न तुम, मैं रो पड़ूँगा।
चाह से खेलो न तुम, मैं रो पड़ूँगा।।

२१

मुस्करा कर रो रहा हूँ।

फूल खिल कर झर रहे हैं।
जी रहे हैं मर रहे हैं॥
मत हँसो हे चाँद! मुझ पर,

चाँदनी में खो रहा हूँ।
मुस्करा कर रो रहा हूँ॥

बात भी है रात भी है।
राह है बरसात भी है॥
दीप की जलती चिता पर–

गीत गा कर सो रहा हूँ।
मुस्करा कर रो रहा हूँ॥

हार लेकर जीत देता।
क्षार लेकर गीत देता॥
मैं किसी के आँसुओं से–

इस धरा को धो रहा हूँ।
मुस्करा कर रो रहा हूँ॥

२२

तुमने मुझे अधर में छोड़ा।

मैं एकाकी खड़ा रह गया।
फूल पगों में पड़ा रह गया॥
बूँद बूँद होकर गलता हूँ।
तेरे मन्दिर में जलता हूँ॥

तुमने फूल डाल से तोड़ा।
तुमने मुझे अधर में छोड़ा॥

तुम रूठे तो दुनिया रूठी।
तुम छूटे तो दुनिया छूटी।।
पात पात होकर गिरता हूँ।
आँधी पानी में फिरता हूँ।।

तुमने मुझे भँवर में छोड़ा।
तुमने मुझे अधर में छोड़ा।।

यह कैसा सन्यास दे दिया!
हँसने का अभ्यास ले लिया।।
हर मन्दिर आँसू का प्यासा।
कोई देता नहीं दिलासा।।

तुमने मुझे डगर में छोड़ा।
तुमने मुझे अधर में छोड़ा।।

२३

मेरे चेतन प्राण ! जाग भी जाओ।

जागो, तारे जाग चुके हैं।
फूलों पर मृदु हास झुके हैं।।
जागा प्यार, नयन भी खोलो !
मुझसे मेरे प्रियतम बोलो !

मेरे मन के मीत ! तनिक मुस्काओ।
मेरे चेतन प्राण ! जाग भी जाओ।।

मन के कोमल भाव जगा लो।
मन से मैला मीत लगा लो।।
मैं सोता सोता जागा हूँ।
तुम्हें पकड़ने को भागा हूँ।।

मेरे पावन गीत! पास भी आओ।
मेरे चेतन प्राण! जाग भी जाओ।।

तुम जागो, दुनिया सोयी है।
जागृति स्वप्नों में खोयी है।।
मेरे नयनों में सोये हो।
मुझ में मिल मुझसे खोये हो।।

मेरे गीले गीत! जाग कर गाओ।
मेरे चेतन प्राण! जाग भी जाओ।।

२४

तुम शरीर हो मैं हूँ छाया।

मेरे कम्पन में तुम थिरके।
मेरी धड़कन में तुम थिरके।।
तुम चलते हो मैं चलता हूँ।
तुम जलते हो मैं जलता हूँ।।

मैं छाया हूँ तुम हो माया।
तुम शरीर हो मैं हूँ छाया।।

तुम मेरी आँखों में फिरते।
तुम मेरे गीतों में घिरते ।।
तुम सूरज मैं धूप तुम्हारी।
आँखों ने आरती उतारी ।।

मुझ में बसी तुम्हारी काया।
तुम शरीर हो मैं हूँ छाया ।।

छाया में माया मिल जाओ।
नयनों में काया मिल जाओ ।।
काया बिना नहीं है छाया।
छाया बिना नहीं है काया ।।

बोल उठे तुम मैंने गाया।
तुम शरीर हो मैं हूँ छाया ।।

२५

काली रात चाँद चमकीला।

इधर अँधेरा उधर उजाला।
तना हुआ मकड़ी का जाला॥
आशा और निराशा दोनों—

फूल खिल रहा बादल गीला।
काली रात चाँद चमकीला॥

सुबह हुई फिर शाम हो गई।
रोते रोते रात सो गई।।
यह क्रम है हँसने रोने का–

सूखी प्यास अश्रु है गीला।
काली रात चाँद चमकीला।।

गीत रुका मातम की वेला।
हंस कहीं उड़ गया अकेला।।
गाते रोते घाव भर गया–

लेकिन दाग़ रह गया नीला।
काली रात चाँद चमकीला।।

२६

मैं अनुकूल नहीं हो पाई, पर तुम क्यों प्रतिकूल हो गये ?

चन्दन के बन में रह कर भी, मैं दुर्गन्ध नहीं तज पाई।
तुमको पाकर ऐसी भूली, फिर मैं तुम्हें नहीं भज पाई।।
माना सौ अपराध किन्तु क्या, मेरी याद न आती होगी।
मेरे अपराधों की गिनती, पल पल तुम्हें सताती होगी।।

मैं आँखों की नदी किन्तु तुम, हटने वाले कूल हो गये।
मैं अनुकूल नहीं हो पाई, पर तुम क्यों प्रतिकूल हो गये ?

मैं तो तुम को शिव समझी थी, गरल कण्ठ से लगा न पाये।
ऐसे भी क्या पाप हुए जो, गंगाजल में समा न पाये।।
नहीं चाहती मेरी लघुता, गुरुता से ऊँची उठ जाये।
मेरे जीवन धन की गुरुता, मेरी लघुता से शर्माये।।

मेरे छूते ही मेरे धन, काँटों वाले फूल हो गये।
मैं अनुकूल नहीं हो पाई, पर तुम क्यों प्रतिकूल हो गये ?

आँसू में बहते बहते भी, मेरे पाप नहीं धुल पाये।
यह मेरा दुर्भाग्य कि मेरा, पारस भी लोहा हो जाये।।
मैं मँझधार किनारे पर हूँ, मेरे भाग्य! डूब मत जाना।
मैं डूबूँ तो डूबूँ लेकिन, तुम नौका को पार लगाना।।

मैंने ऐसी भूलें कीं तुम, जीवन भर की भूल हो गये।
मैं अनुकूल नहीं हो पाई, पर तुम क्यों प्रतिकूल हो गये ?

२७

अनुकूलों से दूर हुआ मन, प्रतिकूलों से प्यार हो गया।

क्या यह मेरी भूल कि मैने, किसी गैर को अपना समझा।
मैंने जिसे सत्य समझा था, उसने मुझको सपना समझा ।।
मुझे दूर ही करना था यदि, तो क्यों तुमने पास बुलाया ?
जब न मुझे चुप कर सकते थे, तो क्यों तुमने मुझे रुलाया ?

तुमने यह क्या किया बताओ, मेरा तो संसार खो गया।
अनुकूलों से दूर हुआ मन, प्रतिकूलों से प्यार हो गया ।।

तुम्हें पड़ा मिल गया राह में, तुमने हीरा पत्थर समझा।
'मीरा' बहुत प्रेम की प्यासी, तुमने उसे न नटवर! समझा।।
तुममें गुण हैं मुझमें अवगुण, मुझे पगों की धूल बहुत है।
तुम्हें पूजने को जीवन भर, मुझको मेरी भूल बहुत है।।

मुझे भूल ने तभी जगाया, जब मैं गहरी नींद सो गया।
अनुकूलों से दूर हुआ मन, प्रतिकूलों से प्यार हो गया।।

मेरी व्यथा न पूछो कोई, मैं तो दीपक तले अँधेरा।
रो कर सोता फिर रोने को, जगा रहा प्रत्येक सवेरा।।
इतना तो अधिकार न छीनो, तुमको मेरा विरह रुलाये।
मैं मिट्टी में मिल सो जाऊँ, तुमको मेरी याद सताये।।

दीपक! अब तुम जलो गर्व से, मैं तो जलकर क्षार हो गया।
अनुकूलों से दूर हुआ मन, प्रतिकूलों से प्यार हो गया।।

२८

मैं गीली आँखों से गीले गीत लिख रहा हूँ।

पीड़ा की तस्वीर खींचता हूँ निर्मल पानी से।
उसके मन की बात कह रहा हूँ प्यासे प्राणी से।।
गंगाजल से गीत प्रीत के आओ सखे! नहालो।
आँखों की गंगा में पीड़ित उर के पाप बहालो।।

आँखों की धारा पर लाखों लीक लिख रहा हूँ।
मैं गीली आँखों से गीले गीत लिख रहा हूँ।

इन गीतों में तारों जैसे अंगारे जलते हैं।
इन गीतों के पथ पर प्राणों के दीपक चलते हैं ।।
इन गीतों में जीने का अभिशाप बसा है भारी।
इन गीतों में तड़प रही है जीवन की लाचारी ।।

मैं लाचारी से अपनी तस्वीर लिख रहा हूँ।
मैं गीली आँखों से गीले गीत लिख रहा हूँ ।।

गीली आँखों को गीली आँखों का ही बल भारी।
इन गीतों को लिखते लिखते कटी ज़िन्दगी सारी ।।
लेकिन गीत न मेरा अब तक पूरा हो पाया है।
आँखों की बरसात सखे! अब तक जो भी गाया है ।।

मैं आँखों से अपना अन्तर चीर लिख रहा हूँ।
मैं गीली आँखों से गीले गीत लिख रहा हूँ ।।

२६

आँख तुम्हारी भर भर आतीं, मेरा हृदय फटा जाता है।

अपनी पीड़ा सह सकता हूँ, पर पीड़ा को देख न सकता।
मैं दुःखों में रह सकता हूँ, पर औरों का घाव चसकता।।
तुम अपना विषपान मुझे दो, मेरा अमृत साथ ले जाओ!
अपने दुःख मुझे दे दो तुम, मेरे पुण्य नाथ! ले जाओ!!

मेरे होते तुम रोते हो, मेरा पुण्य घटा जाता है।
आँख तुम्हारी भर भर आतीं, मेरा हृदय फटा जाता है।।

मत रोओ तुम मैं रो लूंगा, मेरी आँख बहुत गीली हैं।
मेरे दागों की छाया से, नयनों की पुतली नीली हैं।।
अपना आँसू आप पूंछ कर, अब औरों के पूंछ रहा हूँ।
तुम क्यों पानी में बहते हो, मैं तो लाखों बार बहा हूँ।।

तुम जीवन से ऊब रहे हो, मेरा धैर्य हटा जाता है।
आँख तुम्हारी भर भर आतीं, मेरा हृदय फटा जाता है।।

ठहरो सखे! और रुक जाओ, दुःखों से कुछ और लड़ेंगे।
चार दिनों का हँसना रोना, फिर तो सारे फूल झड़ेंगे।।
पर पतझड़ होने से पहले, हम जग पर वसन्त बन छायें।
तन की होली जले बाद में, पहले हम गुलाल बरसायें।।

पर पीड़ा का अनुभव आकर, मेरा दुःख बटा जाता है।
आँख तुम्हारी भर भर आतीं, मेरा हृदय फटा जाता है।।

३०

ज़िन्दगी की राह ढलती धूप सी है।

पेड़ की छाया बदलते चल रहे हैं।
याद में हर छाँह की हम जल रहे हैं।।
खो गई छाया कहीं हम ढूँढते हैं—

छाँह की पहचान छलती धूप सी है।
ज़िन्दगी की राह ढलती धूप सी है।।

इस डगर से हर पथिक ढलता चला है।
इस नगर से हर दिवस जलता चला है।।
ले गई सन्ध्या कहीं अन्तिम किरण को–

ज़िन्दगी की चाह गहरे कूप सी है।
ज़िन्दगी की राह ढलती धूप सी है।।

धूप जैसा रूप ढलता जा रहा है।
आँसुओं में हास गलता जा रहा है।।
छिप गई मुस्कान जीवन की रुदन में–

श्वास की मुस्कान तपती धूप सी है।
ज़िन्दगी की राह ढलती धूप सी है।।

३१

राह हमसे दूर होती जा रही है।
चाह अब मजबूर होती जा रही है।।

दीप से जलते रहे हम।
अश्रु से ढलते रहे हम।।
किन्तु चलते ही रहे हम।
और बढ़ते ही रहे हम।।

दिल्लगी नासूर होती जा रही है।
राह हम से दूर होती जा रही है।।

मृत्यु से हारे नहीं हम।
हार का हमको नहीं गम॥
पर तुम्हारे से गिला है।
क्या तुम्हें हट कर मिला है ?

भावना सिन्दूर होती जा रही है।
राह हम से दूर होती जार ही है॥

चाह भी तुम पर चढ़ादी।
ज़िन्दगी तिल तिल जलादी॥
अर्चना मूर्च्छित पड़ी है।
प्यास आँखों की लड़ी है॥

ज़िन्दगी काफूर होती जा रही है।
राह हम से दूर होती जा रही है॥

३२

मेरे प्राण मुझे मिल जाओ !

जो भी मिला वही छलता है।
जीवन दीपक सा जलता है।।
जलता हुआ जी रहा हूँ मैं।
सब का ज़हर पी रहा हूँ मैं।।

मेरे पास चले भी आओ !
मेरे प्राण मुझे मिल जाओ !

माना पूजा कर न सका मैं।
मर मर कर भी मर न सका मैं।।
तुमने कितने श्वास दे दिये।
मैंने लाखों नाम ले लिये।।

अब तो मेरे सुन्दर आओ!
मेरे प्राण मुझे मिल जाओ!

तुम अपने तो जग अपना है।
तुम रूठे तो जग सपना है।।
मेरा धीरज छूट रहा है।
रोदन मुझको लूट रहा है।।

मेरे सत्य मुझे अपनाओ!
मेरे प्राण मुझे मिल जाओ!

३३

आँसुओं का हार पहिनाऊँ तुम्हें !

यह दृगों की नील धारा है नहा लो !
प्यार की बरसात मेघों में बसा लो ! !
ये न आँसू हैं हृदय की बात हैं।
ये नहीं पलकें युगों की रात हैं।।

रात के अंगार दिखलाऊँ तुम्हें !
आँसुओं का हार पहिनाऊँ तुम्हें ! !

फूट कर हिमगिरि नयन से बह चला।
प्यार में किसका नहीं जीवन ढला!
जल रहा रवि और खिलते फूल हैं।
एक सरिता है मगर दो कूल हैं।।

मैं हृदय की राह मिल जाऊँ तुम्हें!
आँसुओं का हार पहिनाऊँ तुम्हें!!

आँसुओं में गीत शाश्वत प्यार के।
गीत हैं ये जीत के या हार के।।
आँसुओं की बात तुम सुनते रहो।
फूल पलकों से गिरे चुनते रहो।।

चाँद तारों में सजा जाऊँ तुम्हें!
आँसुओं का हार पहिनाऊँ तुम्हें!!

३४

पास बुलाकर दूर कर दिया।
बन्धन इतने सख़्त कर दिये, जीने को मजबूर कर दिया।।

तुम्हें जिताने को जीता हूँ।
भरे जगत में मैं रीता हूँ।।
दीप उजाले में जलता है।
अश्रु अँधेरे में ढलता है।।

आकर पास दूर तुम इतने, तुमने तो संसार हर लिया।
पास बुलाकर दूर कर दिया।।

शूलों ने छाती को छीला।
दुख से फूल पड़ गया पीला।।
आँसू अर्चन बन कर बरसे।
मेरे प्राण मिलन को तरसे।।

प्यासी आँखों में रोने को, तुमने कितना नीर भर दिया।
पास बुलाकर दूर कर दिया।।

मुझे तोड़ लाये डाली से।
मुझे बुलाया उजियाली से।।
सर पर रख पैरों से मसला।
मेरे प्राण ले गई चपला।।

तुमने मेरे गीत ले लिये, मैंने विष से कण्ठ भर लिया।
पास बुलाकर दूर कर दिया।।

३५

दूर दूल्हा है सजे सारे बराती।
बावली कोयल रँगीले गीत गाती।।

डाल पर थक कर अकेली गा रही है।
पी गरल काला अमृत बरसा रही है।।
आ रही दुल्हन बसन्ती झिलमिलाती।
दूर दूल्हा है सजे सारे बराती।

दर्द मीठा झर रहा है काकली से।
रंग उड़ता है गुलाबी साँवली से॥
गीत गाकर वेदना उर की सुलाती।
दूर दूल्हा है सजे सारे बराती।

कौन फूलों की सुरभि में आ रहा है?
जो कि स्वागत गीत गाया जा रहा है॥
कौन किसको गीत गा गा कर बुलाती?
दूर दूल्हा है सजे सारे बराती।

३६

तुमने गाया गीत कहीं से, मेरी नौका पार आ गई ।

मृग मरीचिका तृप्ति बन गई, मिली रेत में गंगा धारा ।
क्षीर सिन्धु बन गया शयन को, मेरी आँखों का जल सारा ।।
भूल भुलैया में भूला था, तुमने सीधी राह दिखादी ।
गीतकार ! बातों बातों में, तुमने सारी रात बितादी ।।

तुमने जीवन का स्वर छेड़ा, मुझमें नयी पुकार आ गई ।
तुमने गाया गीत कहीं से, मेरी नौका पार आ गई ।।

अन्धकार हट गया राह से, दीपों से संसार भर गया ।
गाया माँझी गीत कहीं से, फूलों से मँझधार भर गया ।।
मौत हट गई दूर ज़िन्दगी जग का कफन फाड़ कर जागी ।
धरती के नीचे से आशा, पग की धूल झाड़ कर जागी ।।

तुम मेरे पथ में मुस्काये, पथ में नयी बहार आ गई ।
तुमने गाया गीत कहीं से, मेरी नौका पार आ गई ।।

तुमने कहा चलो हे राही ! मंज़िल खुद ही पास आ गई।
थकता नहीं पिये जाता हूँ, जाने कैसी प्यास आ गई ।।
मधु की मोहक प्यास छीनकर, विष की सुन्दर प्यास जगादी।
जलता नहीं जिये जाता हूँ, तुमने कैसी आग लगादी।।

तुमने छेड़े तार प्यार के, मुझमें मधुर फुहार आगई।
तुमने गाया गीत कहीं से, मेरी नौका पार आ गई।।

तुम चन्दा से झाँक झाँक कर, मेरी चाह बढ़ा जाते हो।
जब सारी दुनिया सो जाती, तुम चुपके चुपके गाते हो।।
जाने कैसा इत्र लगाया, सुरभि उड़ रही रूप नहीं है।
सूरज नभ में दीख रहा है, पर धरती पर धूप नहीं है।।

तुमने छेड़ी लाश किसी की, मुर्दे में झनकार आ गई।
तुमने गाया गीत कहीं से, मेरी नौका पार आ गई।।

३७

तुम से अच्छा ध्यान तुम्हारा ।

ध्यान जागरण मिलन शयन है ।
पूजा हेतु ध्यान ही धन है ।।
ध्यान तुम्हारा हर पल रहता ।
आँखों से गंगा जल बहता ।।

तुमसे अच्छा मान तुम्हारा ।
तुम से अच्छा ध्यान तुम्हारा ।।

ध्यान मुझे तुम ही कर देगा।
जगती की पीड़ा हर लेगा।।
धरती से दिनमान दूर है।
किन्तु न मुझ से ध्यान दूर है।।

तुम से अच्छा गान तुम्हारा।
तुम से अच्छा ध्यान तुम्हारा।।

ध्यान तनिक आया तुम आये।
मुझको मेरे गीत सुनाये।।
चित में चित्र खिँचा रहता है।
दृग में मित्र मिचा रहता है।।

ध्यान बना उपमान तुम्हारा।
तुम से अच्छा ध्यान तुम्हारा।।

३८

तिमिर के वक्ष पर दीपक जला दो !

तमिस्रा के तले दिनमान सोया है।
अँधेरे में मनुज का भाग्य रोया है।।
भविष्यत् तक समय की ज्योति ले जाओ !
गगन के पार से भगवान को लाओ ! !

दुखी के पैर पर पर्वत गला दो !
तिमिर के वक्ष पर दीपक जला दो ! !

धरा की गोद खाली दूध सूखा है।
धधकती आग सा इन्सान भूखा है।।
प्रलय ने गोद के पौधे सुखा डाले।
हवा ने दीप दुनिया के बुझा डाले।।

धरा की पीठ पर तुम तम न लादो !
तिमिर के वक्ष पर दीपक जला दो ! !

पुरानी बात पढ़ते ही रहोगे क्या ?
मनुज! निज मात रटते ही रहोगे क्या ?
प्रथम पग पर जवानी हार बैठे क्यों ?
चलो राही ! स्वयं को मार बैठे क्यों ?

स्वयं दीपक बनो पथ जगमगा दो !
तिमिर के वक्ष पर दीपक जला दो ! !

३६

सत्य हूँ, शिव हूँ, पगों में बन्दिनी है जय !

ओ पराजित, रो न तू तेरा सहारा मैं,
डूबने वाले पथिक, तेरा किनारा मैं,
आग को, जल को, पवन को पार करले तू,
सत्य से पहले दुखी को प्यार करले तू,

मैं दुखी का गीत हूँ, भगवान मुझ में लय !
सत्य हूँ, शिव हूँ, पगों में बन्दिनी है जय ! !

थक गये राही, निराशा हँस रही तुझ पर,
मौन है धरती मनुज की हार से दब कर,
ओ अपरिचित, शक्ति की पहचान करले तू,
आँसुओं को अर्घ्य से भगवान करले तू,

हार से मत हार, तेरे साथ मेरी वय !
सत्य हूँ, शिव हूँ, पगों में बन्दिनी है जय!!

मैं गरल पी आँधियों में घूम आया हूँ,
मैं हिमालय के शिखर को चूम आया हूँ,
मैं गगन में चाँद, सूरज और ध्रुव तारा,
मौत से कहदे चली जा मैं नहीं हारा,

मरसिया मत पढ़ धरा पर छेड़ अनहद लय !
सत्य हूँ, शिव हूँ, पगों में बन्दिनी है जय !!

मैं स्वयं साकार करुणा, पर नहीं रोता,
द्वार का दीपक जला करता, नहीं सोता,
मैं सजग हूँ चोर को घुसने नहीं दूंगा,
मैं धरा से भोर को उठने नहीं दूंगा,

माँ, तुम्हारी गोद में मैंने पिया है पय !
सत्य हूँ, शिव हूँ, पगों में बन्दिनी है जय !!

श्वास जलधर-से धरा के ताप को हरलें,
द्वेष के, दुख के, घृणा के पाप को हरलें,
देवता देखें मनुज की अर्चना के फल,
ला नयी गंगा भगीरथ ! हो धरा उज्ज्वल,

हार उसकी है कि पैरों पर जिसे संशय !
सत्य हूँ, शिव हूँ, पगों में बन्दिनी है जय ! !

छोड़ मत विश्वास अपने ही सहारे चल,
ज़िन्दगी के दीप, सूरज के सहारे जल,
मृत्यु को भ्रम है कि मुझको मार देती है,
बावली है, वय उधारी माँग लेती है,

मुक्ति करती है धरा पर मृत्यु का अभिनय !
सत्य हूँ, शिव हूँ, पगों में बन्दिनी है जय !!

४०

मरण के वक्ष पर इतिहास जीवित है।
चरण की चाप का विश्वास जीवित है।।

न जलता है न बुझता है कभी पानी जवानी का।
धरा को याद है इतिहास मानव की कहानी का।।
छिपी है गन्ध मिट्टी में कि जो खिल फूल में आई।
नया इतिहास लिखने को निशानी धूल में पाई।।

भूमि की गोद में मधुमास जीवित है।
मरण के वक्ष पर इतिहास जीवित है।।

चिता के धूम्र से जलता हुआ आकाश काला है।
सृजन के हित मरण ने ज़िन्दगी का दीप बाला है।।
गगन में रात को जो तारकों के दीप जलते हैं।
कि 'ध्रुव' 'प्रह्लाद' की आराधना को नित निकलते हैं।।

पगों में राह का अभ्यास जीवित है।
मरण के वक्ष पर इतिहास जीवित है।।

पराजित 'पांडवों' को कर गया जो धूल का पुतला।
पहाड़ों को झुकाकर चढ़ गया जो धूल सा पुतला।।
उसी जैसे किसी के पैर ने गंगा निकाली थी।
कि जिसको देखकर हिम शैल ने गर्दन झुकाली थी।।

मनुज में ज़िन्दगी की प्यास जीवित है।
मरण के वक्ष पर इतिहास जीवित है।।

प्रलय को पी गये जो घूंट भर कर भूमि के शंकर।
अमर विश्वास था जिनको राह पर और पैरों पर।।
मरण पर चाँद सूरज से चरण वे जगमगाते हैं।
मुझे कुछ भास होता वे सुलाते हैं जगाते हैं।।

शयन में जागरण का श्वास जीवित है।
मरण के वक्ष पर इतिहास जीवित है।।

व्यर्थ क्यों 'मरसिया' पढ़ने लगे मातम मनाते हो!
मृत्यु की हार पर क्यों आँख से आँसू बहाते हो!
चिता के पास मिट्टी का नया दीपक जला करता।
व्यर्थ भ्रम है न हम मरते मरण हमको छला करता॥

अमृत हूँ मैं अमर विश्वास जीवित है।
मरण के वक्ष पर इतिहास जीवित है॥

सुहागिन मेदनी है मृत्यु से विधवा नहीं होती।
किसी की मौत पर धरती नहीं रोती नहीं रोती॥
न मरते आग, जल, भू मध्य नभ में वायु जीवित है।
नये महमान में फिर से हमारी आयु जीवित है॥

लाश पर ज़िन्दगी का लास जीवित है।
मरण के वक्ष पर इतिहास जीवित है॥

४१

बुझ न जाये दीप इस तूफान में।

ज्योति पर झूमे बवण्डर नाग सा।
दीप बन जाये हवा में आग सा।।
रात भर जल जल सुबह सूरज बनी–
आग इतनी है विरह के गान में।

बुझ न जाये दीप इस तूफान में।

आँधियाँ पथ में, पथिक बढ़ते चलो !
'पूतना' के वक्ष पर चढ़ते चलो !
दे दिशाओं से घटाओं को हटा—
ज्योति ऐसी हो नये दिनमान में।

बुझ न जाये दीप इस तूफान में।

मौत की ज़ंजीर तोड़ो, तोड़ दो !
तुम धरा आकाश जोड़ो, जोड़ दो !
तोड़ता है काल फूलों को मगर—
फूल कम होते नहीं उद्यान में।

बुझ न जाये दीप इस तूफान में।

४२

यह तुमने क्या किया बताओ ?

पैरों में ज़ंजीर डाल दी,
फिर कहते हो बन्दी! जाओ।
पंख काट डाले पलकों से,
कहते मुक्त गगन में गाओ।

पास बुलाकर दूर कर दिया,
यह कैसा इन्साफ तुम्हारा !
रूप तुम्हारा खींच रहा है,
इसमें क्या अपराध हमारा !

मेरे मन से तुम हट जाओ !
यह तुमने क्या किया बताओ ?

तुम क्या जानो अन्धकार में–
मैंने कितने दीप जलाये।
तुमसे मिलने की आशा में–
मैंने कितने नयन गलाये।

कितनी बार मरा धरती पर,
कितनी बार गगन से आया।
बार बार तारे टूटे हैं,
बार बार चन्दा शर्माया॥

चाँद! न अब मुझको शर्माओ।
यह तुमने क्या किया बताओ?

तेरे मन्दिर में बन्दी हो,
मैं उपासना करता रहता।
अर्घ्य चढ़ाता हूँ आँसू का,
तन का दीपक धरता रहता।

मेरा सत्य निहित है तुम में,
तुम में मेरे प्राण समाये।
देव! तुम्हारे पथ में मैंने–
इन गीतों के दीप जलाये।

मन में मन का दीप जलाओ!
यह तुमने क्या किया बताओ?

४३

तुमने मुझको कैद कर लिया।
मुक्त गगन में उड़ने वाले पक्षी को आबाद कर दिया।।

नाता टूट गया अम्बर से जुड़ा नहीं धरती से नाता।
मैं स्वतन्त्रता की लहरों पर डोल रहा था चक्कर खाता।।
द्वार द्वार पर भटक रहा था अपने सुन्दर भाव लुटाता।
डाल डाल पर पात पात पर गिरता उठता फिर उड़ जाता।।

पर तुमने मेरे गीतों में जीवन का आधार भर दिया।
तुमने मुझको कैद कर लिया।।

मैं आँखों से गिरा हुआ था तुमने आँखों में बैठाया।
तुमने अपनी स्नेह ज्योति से मेरा बुझता दीप जलाया।।
ओ मेरे स्वप्नों के राजा! मेरी तो मैली चादर है।
तुमने बहुत दिया मुझको पर मेरी तो रीती गागर है।।

उड़ना चाहूँ उड़ न सकूं अब कैसा अद्भुत प्यार भर दिया।
तुमने मुझको कैद कर लिया।।

लोहे की ज़ंजीरें होतीं तो मैं तोड़ फोड़ उड़ जाता।
मैं 'सुभाष' की तरह छूटता फिर मैं तेरे हाथ न आता।।
पर यह तो मन का बन्धन है, मन ने मन को बाँध लिया है।
दोष तुम्हारा ही है तुमने निरपराध को कैद किया है।।

मैं तो गरल पान का प्यासा तुमने घट में अमृत भर दिया।
तुमने मुझ को कैद कर लिया।।

४४

कौन काँटों में खिलाये जा रहा है फूल ?

क्या अपरिचित ही रहेगी रूप! तेरी राह ?
क्या न जीवन का कभी भी शान्त होगा दाह ?
चाह में कब तक करूंगा आँसुओं को धूल ?
कौन काँटों में खिलाये जा रहा है फूल ?

चाहिये मुझको तुम्हारे सत्य का संसार।
प्राण ! भर भी दो हृदय में तृप्ति की झनकार ।।
यह बतादो है कहाँ मँझधार ! तेरा कूल ?
कौन काँटों में खिलाये जा रहा है फूल ?

विश्व में किसको भला है पाप की पहिचान !
ज्ञान की पहिचान देता है अमर अज्ञान ।।
मैं सदा करता रहा, करता रहूँगा भूल।
कौन काँटों में खिलाये जा रहा है फूल ?

फूल तो करता रहा है शूल से भी प्यार।
ठोकरें करती रही हैं धूल से भी प्यार ।।
शयन कर लेगी पगों में ज़िन्दगी की धूल।
कौन काँटों में खिलाये जा रहा है फूल ?

४५

रात भर बरसात होती ही रही।

बिजलियाँ चमकीं गगन रोता रहा।
विश्व गहरी नींद में सोता रहा।।
मेघ झरते थे दिशा की गोद में।
चाँद गाता था निशा की गोद में।।

बावली बेबात रोती ही रही।
रात भर बरसात होती ही रही।।

हर सड़क पर थी वियोगिन की कथा।
जाग कर देखी किसी ने वह व्यथा।।
भूमि पर दो बूंद आँखों से गिरीं।
चाँद पर काली घटायें जब घिरीं।।

शून्य में कुछ बात होती ही रही।
रात भर बरसात होती ही रही।।

भूमि के हित कौन नभ में गल रहा।
कौन निशि भर गल सबेरे जल रहा।।
सूर्य में किसके हृदय की आग है।
बादलों में क्या अनोखा फाग है।।

रात मेरे साथ रोती ही रही।
रात भर बरसात होती ही रही।।

४६

पेड़ पर पक्षी अकेला रो रहा है।

फूल इतने हैं मगर इसका न कोई।
शूल इतने हैं मगर इसका न कोई॥
बावले! यह पेड़ तजना ही पड़ेगा।
एक दिन हर फूल मिट्टी पर चढ़ेगा॥

देख माली आगया तू सो रहा है।
पेड़ पर पक्षी अकेला रो रहा है॥

सिर्फ तू ही तो अकेला है न भाई !
चाँद की किस से हुई अब तक सगाई !
और सूरज ज्योति लाता है अकेला ।
हंस आता और जाता है अकेला ।।

एक ईश्वर है इसे क्या हो रहा है !
पेड़ पर पक्षी अकेला रो रहा है ।।

ज़िन्दगी को पेड़ की छाया बहुत है ।
साथ चलने के लिये काया बहुत है ।।
बात करने के लिये गायक तुम्हारा ।
रात कटने के लिये शायर तुम्हारा ।।

मोतियों को धूल में क्यों खो रहा है ?
पेड़ पर पक्षी अकेला रो रहा है ।।

४७

जीत की दुलहन मिली हर हार पर दीपक लिये ।

फूल के सौन्दर्य पर भौरा मचल कर गा रहा ।
दीप की लौ पर पतंगा प्यार पाने जा रहा ।।
चाँद छूने को लपकता है चकोरी का पिया ।
प्रात पाने के लिये ही रात भर जलता दिया ।।

गीत की रानी मिली हर प्यार पर दीपक लिये ।
जीत की दुलहन मिली हर हार पर दीपक लिये ।।

मृत्यु के सौन्दर्य पर हर फूल खिल कर झर गया।
प्यार का प्यासा पतंगा दीप पर जल मर गया।।
कालिमा में ज्योति की शाश्वत किरण सोयी पड़ी।
जय पराजय के रुदन में मृत्यु सी जीवित खड़ी।।

हर दिशा में जल रहे हैं चार आँसू के दिये।
जीत की दुलहन मिली हर हार पर दीपक लिये।।

लाख पतझड़ चीर कर ऋतु-राज आता ही रहा।
मैं मरण में जिन्दगी के गीत गाता ही रहा।।
जो न हारा है उसे पहिचान क्या है जीत की।
हार ही तो पूर्ति होती है अधूरे गीत की।।

हर निराशा की निशा में गीत आशा के दिये।
जीत की दुलहन मिली हर हार पर दीपक लिये।।

४८

आँखों को क्या हुआ न जाने बात बात में भर आती हैं।

कोई कुछ भी कह लेता है, अब तो सब की सुन लेता हूँ।
बहुत हुआ तो पागल बनकर, अपना माथा धुन लेता हूँ।।
चोट हृदय में लगती है पर, आँखें पानी पानी होतीं।
मैं लिखता हूँ गीत किन्तु क्यों आँखें रात रात भर रोतीं ?

आँखों ही आँखों में मेरी सारी रातें कट जाती हैं।
आँखों को क्या हुआ न जाने बात बात में भर आती हैं।।

आँखों वालो ! आँख खोलकर, पहिचानो आँखों की भाषा।
रोते हुए नयन बोलो तो, किसे देखने की अभिलाषा ?
क्या मेरी ही तरह तुम्हें भी, याद किसी की रह रह आती ?
ऐसी भी क्या व्यथा हो गई, जो फूलों की महक न भाती ।।

इनसे मेरा मौन मुखर है, किसका विरह गीत गाती हैं।
आँखों को क्या हुआ न जाने बात बात में भर आती हैं ।।

मैंने देखा किसी दुखी को, ये तुरन्त बरसात बन गई।
मैंने देखा तनिक रूप को, ये युग युग की बात बन गईं ।।
ये उस दिन रोयीं थीं जिस दिन, चाँद मरा अम्बर रोया था।
इनके साथ साथ ही उस दिन, मैंने भी सब कुछ खोया था ।।

आँखों की क्या बात कहूँ ये, रोते रोते मिच जाती हैं।
आँखों को क्या हुआ न जाने बात बात में भर आती हैं ।।

४६

तेरी पर्दे की सूरत पर मैंने खुद को मिटा दिया है।

अब तो अपना मुझे बनाले, ओ पर्दे में रहने वाले!
जग की हर सूरत छलती है, अब तो अपने पास बुलाले।।
किसको छोड़ूं किसको पकड़ूं, तुमने लाखों फूल खिलाये।
उसको जग फीका लगता है, जिसने तुम से नयन लगाये।।

तुम्हें चाहने वाले लाखों, तुमने खुद को छिपा लिया है।
तेरी पर्दे की सूरत पर मैंने खुद को मिटा दिया है।।

क्यों दुनिया से दूर हट गये, ओ दुनिया के रचने वाले !
मेरी आँखों में बस जाओ, ओ कण कण में बसने वाले !
पूज्य ! पुजारी के आगे से पानी की दीवार हटा दो।
ओ अन्तर में रहने वाले ! आँखों को सूरत दिखलादो ।।

तुझसे मिलने की आशा में मैंने गा गा गरल पिया है।
तेरी पर्दे की सूरत पर मैंने खुद को मिटा दिया है।।

लाखों बार द्वार पर आया, अब तो अपने द्वार खोल दे !
गाते गाते गिरा रुक गई, अब तो मेरे राम ! बोल दे ।।
बार बार मैं मरा जन्म ले, बार बार चोला बदला है ।
तुमको मेरा रूप न भाया, सूरज निकला और ढला है ।।

जन्म जन्म में हार मान कर, मैंने तुमको जिता दिया है ।
तेरी पर्दे की सूरत पर मैंने खुद को मिटा दिया है ।।

५०

रो रहा हूँ मैं मुँदी तकदीर जैसे रो रही हो।

आँख में तस्वीर तेरी है मुझे सोने न देती।
भावना मेरी मुझे तुझसे अलग होने न देती।।
आँख खोलो, द्वार पर पूजा पहेली सी खड़ी है।
खत्म होती ही नहीं जो रात यह कितनी बड़ी है।।

सो रही हो तुम किसी की पीर जैसे सो रही हो।
रो रहा हूँ मैं मुँदी तकदीर जैसे रो रही हो।।

किन्तु मेरी नींद खोयी है तुम्हारी वन्दना में।
उम्र बढ़ती जा रही है रूप! तेरी अर्चना में।।
मानता हूँ मैं कहीं भी अन्त पूजा का नहीं है।
जानता हूँ, मैं जहाँ पर हूँ पिया! तू भी वहीं है।।

रो रहा हूँ मैं किसी की "होर" जैसे रो रही हो।
रो रहा हूँ मैं मुँदी तकदीर जैसे रो रही हो।।

दूर तुम ऐसे कि जैसे पास है कविता प्रणय के।
पास तुम ऐसे कि जैसे पास सुन्दर गीत लय के।।
दूर होकर पास हो तुम, पास होकर दूर मुझसे।
मैं तुम्हारे द्वार आया क्या कहूँ मैं और तुझसे।।

खो रहा हूँ मैं किसी से राह जैसे खो रही हो।
रो रहा हूँ मैं मुँदी तकदीर जैसे रो रही हो।।

५१

रात ढलती जा रही है, दिन निकलता आ रहा है।
कौन यह राही न जाने राह चलता जा रहा है।।

रात दिन की इस पहेली में सभी उलझे पड़े हैं।
श्वास घट घट कह रहे हैं रात दिन सब से बड़े हैं।।
पर किसी के गीत गंगा से अचल को चीर कहते—
हम प्रलय में भी धरा पर श्वास से स्वरकार रहते।।

चाँद सूरज के दिये ले गीत गायक गा रहा है।
रात ढलती जा रही है, दिन निकलता आ रहा है।।

धूप बन कर तप रहा है छाँह बन विश्राम देता।
सिन्धु से उठकर गगन पर रुक धरा को थाम लेता।।
काल से हारा नहीं यह, लक्ष्य पैरों के तले हैं।
अर्चना में जागरण के अनगिनत दीपक जले हैं।।

रात दिन की बात युग युग से बटोही गा रहा है
रात ढलती जा रही है, दिन निकलता आ रहा है

जो नयन में आ बनी है गीत वह उम्मीद हूँ मैं।
अर्चना में जल रहा जो दीप उसकी नींद हूँ मैं।।
प्यार पानी है नयन में जग वियोगी की कहानी।
देवता पर चढ़ रही है फूल की हँसती जवानी।।

पीर किसकी गल रहा शशि, सूर्य जलता जा रहा है
रात ढलती जा रही है, दिन निकलता आ रहा है